International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

निराला की काव्य भूमि और उसका रचनात्मक विस्तार

Deepak Singh

Assistant Professor, Rajeev Gandhi Govt. P.G. College Ambikapur

शोध-सार :

निराला को किसी एक खांचने में बांधना बहुत मुश्किल है चाहे वह छायावाद का हो, प्रगति-प्रयोग का, या समकालीन कविता का | उनकी कविता में व्यापक मुक्ति की चेतना है | यह मुक्ति एकरेखीय न होकर बहुआयामी है | विदेशी पराधीनता से मुक्ति के साथ-साथ यह समाज की उन रूढ़ियों-परम्पराओं से मुक्ति है जिसने मानव जीवन को जड़ बना रखा है | स्त्री, किसान दलित, मजदूर सभी इस दायरे में शामिल हैं | निराला की रचना प्रक्रिया बहुआयामी है जिसका विस्तार वर्तमान कविता तक होता चला आ रहा है | 'रचना प्रक्रिया का विस्तार' पद किंचित अजीब लग सकता है लेकिन शमशेर बहादुर सिंह जैसा कवियों का कवि इसकी गवाही दे गया है | निराला ने जीवन और रचना कर्म का अद्वैत निर्मित किया, जिसने उन्हें मर्म भेदक दृष्टि प्रदान की | इसीलिए हर राह भटका लौट-लौट कर उन तक जाता है बस शर्त यह है कि वह शमशेर की तरह सच्चा हो |

बीज शब्द : छायावाद, मुक्तिकामी चेतना, सुर्जकुमार, जीवन-संघर्ष, रचना-प्रक्रिया, साहित्य साधना, रचनात्मक वैविध्य, जीवन और मृत्यु, संवेदना, संशय

हिन्दी साहित्य में छायावाद को एक लम्बे समय तक आलोचना-प्रत्यालोचना का शिकार होना पड़ा क्योंकि यह दौर द्वंद्व और संक्रमण की ऐतिहासिक प्रक्रिया का दौर रहा है | द्विवेदी युगीन अनुशासन और इतिवृत्तात्मकता से अलग यह एक नए रास्ते की तलाश का युग | इस युग में निराला सबसे ज्यादा प्रयोगधर्मी और विविधता के कवि के रूप में सामने आते हैं| निराला का जन्म महिषादल, बंगाल के मिदनापुर जिले में हुआ था | उम्र का एक हिस्सा उन्होंने यहीं गुजारा, शिक्षा आरंभ भी यहीं हुआ | स्कूल में पढाई के दौरान ही उन्हें बांग्ला साहित्य की भव्यता का एहसास हो चुका था लेकिन निराला का मन ब्रज और भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य में अधिक रमता था| रामविलास शर्मा लिखते हैं "बंगाली जाति महान है,बंगला भाषा के समान भारत की कोई भाषा नहीं, रवींद्रनाथ संसार के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, सुर्जकुमार बंगाली नहीं, 'हिंदुस्तानी' हैं- यह सब ज्ञान एंट्रेंस परीक्षा देने से पहले ही मित्रों ने उन्हें कर दिया| सुर्जकुमार बंगला की अपेक्षा हिन्दी ही ज्यादा जानते थे | उनका मन भक्ति-साहित्य और श्रृंगार-रस की कविता, दोनों में ही रमता था | उन्होंने ब्रजभाषा की काफी कविता पढ़ डाली थी | पद्माकर उनके प्रिय कवि थे उनकी सानुप्रास शब्दावली, श्रृंगार वर्णन में भी ओजगुण का पुट सुर्जकुमार को विशेष पसंद था |"1 निराला की सुर्जकुमार से सूर्यकांत त्रिपाठी बनने की कहानी काफी रोचक है| यदि यह कहा जाय कि निराला के भीतर कवि बनने का बीज उनकी पत्नी मनोहरा देवी ने बोया था तो कुछ अतिश्योक्ति न होगी | विवाह के बाद निराला और उनकी पत्नी के बीच कई मसलों पर मतभेद सामने आते हैं यहाँ तक कि मनोहरा देवी के शील,गुण,संगीत,अध्ययन आदि के आगे निराला को कोई तवज्जो भी नहीं देता था| "सुर्जकुमार को लग रहा था, पत्नी उनके अधिकार में पूरी तरह नहीं आ रही| एक दिन उनका गाना सुना, लोगों को उनके गाने की प्रशंसा करते सुना | जिसे देखो वही मनोहरा देवी की चर्चा कर रहा था, मानो सुर्जकुमार घर में हों ही नहीं! मनोहरा देवी ने भजन गाया :

श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन हरणभवभय दारुणम् |

तुलसीदास की शब्द-योजना इतनी सुन्दर है, सुर्जकुमार के ध्यान में यह बात पहले न आई थी | जब मनोहरा देवी ने गाया :

कन्दर्प अगणित अमित छवि नवनील नीरज सुन्दरम्!

तब सुर्जकुमार को लगा, गले में मृदंग बज रहा है |

मनोहरा देवी के कंठ से तुलसीदास का यह छंद सुनकर सुर्जकुमार के न जाने कौन-से सोते संस्कार जाग उठे | साहित्य इतना सुन्दर है, संगीत इतना आकर्षक है, उनकी आँखों ने जैसे एक नया संसार देखा, कानों ने ऐसा संगीत सुना जो मानो इस पृथ्वी पर दूर किसी लोक से आता हो! अपनी इस विलक्षण अनुभूति पर वह स्वयं चकित रह गए | अपने जीवन पर जो अभिमान था, वह चूर-चूर हो गया | ऐसा ही कुछ गाएँ, ऐसा कुछ रचकर दिखाएँ, तब जीवन सार्थक हो|" 2

इस बात की ताक़ीद निराला स्वयं भी करते हैं कि मनोहरा देवी के साथ ससुराल में रहते हुए उन्हें हिन्दी साहित्य और संगीत की अपनी अल्पज्ञता का बोध हुआ और वहीँ से उनके मन में एक संकल्प ने जन्म लिया | कहाँ तो वह मनोहरा देवी के ऊपर अपना प्रभाव ज़माना चाहते थे, सोचते थे वह उनका शिष्यत्व स्वीकार करे लेकिन

मनोहरा देवी के ऊपर उनका कोई भी प्रभाव काम नहीं कर रहा था| अपने प्रसिद्ध उपन्यास कुल्ली भाट में निराला इस वाकये पर विस्तार से प्रकाश डालते हैं-

" मुझे श्रीमती जी की विद्या की थाह नहीं थी |

एक दिन बात लड़ गई | मैंने कहा, "तुम हिन्दी-हिन्दी करती हो, हिन्दी में क्या है ?"

उन्होंने कहा, "जब तुम्हें आती ही नहीं, तब कुछ नहीं है |"

मैंने कहा "हिन्दी मुझे नहीं आती ?"

उन्होंने कहा "यह तो तुम्हारी जबान बतलाती है | बैसवाड़ी बोल लेते हो, तुलसीकृत रामायण पढ़ी है बस | तुम खड़ी बोली का क्या जानते हो |"

तब मैंने खड़ी बोली का नाम भी नहीं सुना था | पं. महावीर प्रसाद जी द्विवेदी, पं. अयोध्या सिंह जी उपाध्याय,बाबू मैथिलीशरण जी गुप्त आदि तब मेरे लिए स्वप्न में भी नहीं थे, जैसे आज हैं |"3

देखा जाय तो इस वाकये ने निराला के जीवन को पूरी तरह बदल दिया | यहाँ से निराला के जीवन की साहित्य साधना शुरु होती है | उन्होंने सरस्वती, मर्यादा आदि पत्रिकाओं के माध्यम से खड़ी बोली हिन्दी सीखी, व्याकरण में निपुणता प्राप्त की | यह निराला के जीवन का एक अध्याय था अभी दूसरा अध्याय शुरू होना था जिसमें उन्हें दुःख की कठिन परीक्षा से पार उतरना था |

निराला माँ को बचपन में ही खो चुके थे अब पिता की मृत्यु के बाद पारिवारिक जिम्मेदारियों ने उन्हें वापस महिषादल पंहुचा दिया | साहित्य और संगीत का अनुरागी युवक दुनियादारी की गाड़ी खीचने के लिए राज कर्मचारी बन वसूली और हिसाब किताब की दुनिया में घिर गया | इस बीच दो बच्चे हो चुके थे रामकृष्ण और सरोज | अज्ञेय ने लिखा है 'वेदना में शक्ति होती है जो दृष्टि देती है' | यह उक्ति निराला के जीवन में सटीक उतरती है | महिषा दल में रहते हुए ही निराला को तार मिला कि तुम्हारी पत्नी बहुत बीमार है शीघ्र आओ और जब तक निराला पहुंचे मनोहरा देवी की चिता शांत हो चुकी थी उसके बाद तो जैसे पूरे परिदृश्य को ही मृत्य ने घेर लिया, परिवार आधा रह गया "जिन्दगी का यह दौर एक भयानक सपने जैसा था | सारा कुनबा ही उजड़ गया | अब सर पर किसी का साया नहीं | रामसहाय-रामलाल की पीढ़ी तो ख़त्म हो ही गई, बदलू-सुर्जुकुमार की पीढी में भी अकेले सूर्जकुमार रह गए | एक आदमी की कमाई से इतने बच्चों का खर्च कैसे चलेगा? इतनी मौतें एक साथ देखकर कोई अपने औसान कैसे कायम रखे? कोई ऐसी पाठशाला नहीं जहाँ ऐसी परिस्थिति का सामना करने की शिक्षा आदमी को पहले से दी जा सके | फिर सूर्जकुमार के दिन लाड़-प्यार में बीते थे | जिन्दगी के बीस साल निश्चिन्त बिताने के बाद सर पर यह आफत का पहाड़ ही टूट पड़ा|"4 यह बहुत बड़ा झंझावात था जिससे निकलने का रास्ता ढूंढते निराला साहित्य से लेकर अध्यात्म तक निरंतर आवाजाही करते रहे | निराला के रचनात्मक वैविध्य को बिना उनके जीवन को जाने समझना मुश्किल है | जीवन की ऐसी परिस्थितयां जिन्होंने निराला के साहित्यिक जीवन की दिशा तय की यदि उन्हें सूत्रबद्ध करने का प्रयास किया जाय तो सूची कुछ इस तरह बनाई जा सकती है –

1- मनोहरा देवी का सानिध्य और उनकी मृत्यु से उपजा वैराग्य
2- बंगाल की साहित्य-संस्कृति-अध्यात्म में डूबी हुई आबोहवा जिसने उन्हें देश की हकीकत के साथ दुनिया की गंभीर हल-चलों से परिचित करवाया
3- महिषादल के राजा की चाकरी करते हुए भारतीय जनता के अदम्य शोषण से सामना
4- जीवन-निर्वाह की कठिन परिस्थियाँ और बेरोजगारी

निराला की पूरी काव्य-यात्रा इसी के इर्द-गिर्द घूमती दिखाई पड़ती है | उनकी कविता में व्यापक मुक्ति की चेतना इन्हीं परिस्थितियों से पैदा होती है | यह मुक्ति एकरेखीय न होकर बहुआयामी है| विदेशी पराधीनता से मुक्ति के साथ-साथ यह समाज की उन रूढ़ियों-परम्पराओं से मुक्ति है जिसने मानव जीवन को जड़ बना रखा है | स्त्री,किसान दलित, मजदूर सभी इस दायरे में शामिल हैं | इसीलिये उनके साहित्य में अप्सरा,अलका से लेकर चतुरी चमार, कुल्लीभाट, पत्थर तोड़ती स्त्री, महंगू, झींगुर और कुकुरमुत्ता भी शामिल है| अपनी मुक्तिकामी चेतना को लेकर वे निरंतर आलोचना के शिकार बनते हैं लेकिन इससे हार न मानते हुए शक्तिपूजा के राम की तरह पुनः-पुनः मौलिक शक्ति की कल्पना करते हैं | इस मुक्ति की प्रेरणा उन्हें अपने उन तमाम जीवन-अनुभवों से मिलती है जिसका जिक्र ऊपर किया गया है | स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान विदेशी पराधीनता से मुक्ति के साथ समानता और बंधुत्व का सपना सम्पूर्ण भारत के कवियों का सपना था | सुब्रमण्यम भारती की कविता 'नाचेंगे हम' को देखिये-

दिन बीत गया है, ब्राहमण को प्रभु कहने का,
गोरे फिरंगियों को हुजूर भी कहने का |
हमसे करके याचना हमारे ऊपर ही-
शासन करनेवालों की सेवा करने का ||
जिसने हमको अब तक अंधियारे में रखा,

उस दगाबाज अन्यायी का दिन बीत गया,हम नाचेंगे ||

नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे || 5

हिन्दी में इस स्वर के अगुआ निराला हैं | हिन्दी नवजागरण के स्वरूप को किसी एक कविता के माध्यम से समझना हो तो वह कविता है 'वर दे वीणावादिनी वरदे' | इस कविता में जहाँ एक और अन्धकार में घिरी हुई भारतीय जनता के भीतर प्रकाश की कामना के साथ स्वतंत्रता की उत्कट आकांक्षा व्यक्त होती है तो वहीँ दूसरी और रवीन्द्रनाथ का अंतर्राष्ट्रीयतावाद या कहें वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा भी विद्यमान है | संकीर्ण राष्ट्रवाद से अलग यह स्वर एक पराधीन राष्ट्र के मनीषी की उच्चतम मेधा का ही परिणाम कहा जायेगा |

"वर दे, वीणावादिनि वर दे!

प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव

भारत में भर दे!

काट अंध-उर के बंधन-स्तर

बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;

कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर

जगमग जग कर दे"6

निराला के बचपन में ही ऐसे कई प्रसंग मिलते हैं जिनसे पता चलता है कि बंधन निराला को कभी बांध नहीं पाया | जिस बात को उनकी बुद्धि ने स्वीकार नहीं किया उसका प्रतिकार करने में वे कभी नहीं हिचके | उनके बचपन का एक प्रसंग आता है- "सुर्जकुमार पिता के साथ गढ़ाकोला आए| अब वह आठ साल के हो गए थे | लोगों से सुनते कि जनेऊ हो जाने के बाद लड़के हर किसी के हाथ का छुआ खा-पी नहीं सकते | सुर्जकुमार सोचते, आखिर जनेऊ पहनने से ऐसा क्या हो जायेगा कि मैं दूसरों का छुआ खा न सकूंगा? पतुरिया के लड़कों से दोस्ती थी | उसके यहाँ आना-जाना बंद करना पड़ेगा | अब तालुकदार भगवानदीन दुबे नहीं थे | समाज में इस परिवार का मान घट गया था | जब तालुकदार ने बड़े लड़के शमशेरबहादुर का जनेऊ किया था, तब ब्रह्मभोज में सब बाम्हन शामिल हुए थे | पर अब इन्हीं लोगों ने उनके यहाँ खाना-पीना बंद कर दिया था | पतुरिया के छोटे लड़के फतहबहादुर ने सुर्जकुमार से कहा : "अभी तुम हमारे यहाँ खाते हो, जब जनेऊ हो जायेगा, न खाओगे |" उन्हें यह भी याद दिलाया कि उनके ताल्लुकदार पिता ने सुर्जकुमार के बड़े चाचा को जमीन माफी दी थी | फतहबहादुर की बहन परागा ने कहा : "बदलू सुकुल के यहाँ महुए की लप्सी खाओगे, हमारे यहाँ हलुआ नहीं |" सुर्जकुमार ने तय किया कि जनेऊ के बाद भी इनके यहाँ खांए-पियेंगे, देखें, कोई क्या कर लेता है!"7 और हुआ भी यही तमाम पाबंदियों को धता बताकर, पिता की मार खाकर भी सुर्जकुमार अपने कौल पर अड़े रहे | निराला की कविता में बंधन के प्रति विद्रोह उनके जीवन से ही आया था और कविता के क्षेत्र में तो इस विद्रोह ने कमाल ही रच दिया """मनुष्यों की मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है।"8 निराला छंदों के कम जानकार नहीं थे, हिन्दी के जातीय छंद पर उनका काम शानदार है (देखे निराला का निबंध) लेकिन सौन्दर्य विधान के लिए बनाई गई चीज बंधन बन जाय यह भला निराला को कैसे मंजूर हो सकता था | निराला बंधन का कदम-कदम पर विरोध करते हैं वे न तो समाज में बंधन को स्वीकार करते हैं न प्रेम में |

"छोटे से घर की लघु सीमा में

बंधे हैं क्षुद्र भाव,

यह सच है प्रिय,

प्रेम का पयोधि तो उमड़ता है

सदा ही निःसीम भू पर"9

निराला ने जीवन और मृत्यु दोनों को बहुत नजदीक से देखा था, इसलिए उनका साहित्य गहन संवेदना और अनुभव का साहित्य है | जीवन के आख़िरी दिनों में निराला जिस स्थिति में पहुँचते हैं वह भी उनकी इसी संवेदनशीलता का परिणाम है | अद्भुत आकर्षण से युक्त निराला इनसे निरंतर जूझते-टकराते हैं और अपना रास्ता बनाते हैं | उनके यहाँ एक ओर जहाँ 'स्नेह निर्झर बह गया है' जैसी निराशाजनक कविता है वहीं 'अभी न होगा मेरा अंत' जैसी जीवन-ऊर्जा भी | लेकिन निराला इतने मात्र से निराला नहीं बनते छायावादी कवियों में निराला ही ऐसे हैं जिन्होंने अपने मैं को परिभाषित किया – "मैंने मैं शैली अपनाई, देखा दुखी एक निज भाई"10 निराला का मैं दुखी सामाजिक वर्ग का प्रतिनिधि 'मैं' है | इस 'मैं' की व्याप्ति बहुत दूर तक है | 1946 में उनकी एक कविता प्रकाशित हुई 'महगू महगा रहा', यह कविता आने वाली आजादी के वर्गीय स्वरूप को चिह्नित करने वाली एक बड़ी कविता है जिसका विस्तार आजादी के बाद लिखी जाने वाली कविताओं में अधिक स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ता है | निराला आने वाली आजादी के स्वरूप को लेकर एकदम स्पष्ट हैं, कठोर यथार्थवादी, कोई मोह नहीं परिस्थिति को उसकी द्वंद्वात्मकता में समझते

और समझाते हुए वे प्रेमचंद की जमीन पर पहुँच जाते हैं लेकिन वहां ठहरते नहीं | ठहरते हैं भगत सिंह की परम्परा पर जाकर | कविता शुरू होती है जवाहर लाल नेहरू की 1946 में हुए चुनाव प्रचार से, निराला पहले नेहरू का एक व्यंग्यात्मक परिचय देते हैं फिर उनकी राजनीति की मूल समस्यायों को बड़ी सहजता से रेखांकित करते चले जाते हैं | जवाहरलाल के साथ एक ही मंच पर राजे रजवाड़े हैं, लेंड़ी जमीदार हैं, मिलों के मुनाफाखोर पूजीपति हैं और सबसे अंत में जनता भी है | निराला कहते हैं "फिर भी आजादी की हाँक का नशा बड़ा है

लोगों पर चढ़ता है |

विपत्तियाँ कई हैं घूस और डंडे की ;

उनसे बचने के लिए

रास्ता निकाला है, सभाओं में आते हैं

गांवों के कुल लोग |"11

पंडित जी सभा में घोषणा करते हैं कि एक साल में आजादी लेनी है, जनता खुश होती है लेकिन निराला का महगू खुश नहीं होता, उसे आभास है कि यह भी अपने नहीं हैं | जिन्हें निराला की वर्ग दृष्टि पर भ्रम हो उन्हें यह पंक्तियाँ देखनी चाहिए – लकुआ के प्रश्न "आजकल कहते हैं, ये भी अपने नहीं ?" का उत्तर देते हुए महगू कहता है -

"महगू ने कहा, हाँ, कम्पू में किरिया के

जो गोली लगी थी,

उसका कारन पण्डित जी का शागिर्द है;

रामदास को कांग्रेस मैन बनाने वाला,

जो मिल का मालिक है |

यहाँ भी वह जमींदार, बाजू से लगा ही है |

कहते हैं, इनके रूपये से ये चलते हैं

कभी-कभी लाखों पर हाथ साफ़ करते हैं |"12

इन चंद पंक्तियों में निराला यथार्थ का रेशा-रेशा उघाड़ देते हैं और कविता आगे जो कहती है वह एक अनवरत संघर्ष की रूप-रेखा है जिसमें उनकी दृष्टि स्पष्ट वर्ग-चेतना से संचालित होती दिखाई पड़ती है | लकुआ घबराकर कहता है कि ऐसी स्थिति में हम कहाँ जाएँ, हमारा क्या होगा ? प्रतिउत्तर में महगू कहता है –

"एक उड़ी खबर सुनी है,

हमारे अपने हैं यहाँ बहुत छिपे हुए लोग,

मगर अभी ढीला-पोली है देश में,

अखबार व्यापारियों की ही संपत्ति हैं,

राजनीति कड़ी से कड़ी चल रही है

वे सब जन मौन हैं इन्हें देखते हुए;

जब ये कुछ उठेंगे,

और बड़े त्याग के निमित्त कमर बाँधेंगे,

आयेंगे वे जन भी देश के धरातल पर,

अभी अखबार उनके नाम नहीं छापते |

ऐसा ही पहरा है |"13

"हमारे अपने हैं यहाँ बहुत छिपे हुए लोग" तो किसके अपने ? मजदूरों और किसानों के अपने लोग | निराला एक ऐसे दौर में यह बात लिख रहे थे जब आजादी को लेकर एक दीवानगी पूरे देश में छाई थी लेकिन वह निराला ही कैसा जो सच कहने से डर जाय | इस कविता के काव्यात्मक और राजनीतिक विस्तार को हम स्पष्टतः रेखांकित कर सकते हैं – उदाहरण के लिए 1963-64 में प्रकाशित मुक्तिबोध की कविता भूल-ग़लती में निराला के यही अपने छिपे हुए लोगों में से एक सुदूर पहाड़ के उस पार भाग जाता है –

"महसूस होता है कि वह बेनाम

बेमालूम दर्रों के इलाके में
(सच्चाई के तेज अक्सों के धुँधलके में)
मुहैया करा रहा लश्कर ;
हमारी हार का बदला चुकाने आएगा
संकल्प-धर्मा चेतना का रक्तप्लावित स्वर,
हमारे ही हृदय का गुप्त स्वर्णाक्षर
प्रकट होकर विकट हो जायेगा !!"14

इसीलिये निराला को किसी एक खांचने में बांधना बहुत मुश्किल है चाहे वह छायावाद का हो, प्रगति-प्रयोग का, या समकालीन कविता का | यदि प्रयोग की बात करें तो राम की शक्तिपूजा जैसी मिथकीय विषयवस्तु पर आधारित कविता में निराला राम का रामत्व छीन कर उन्हें एक आधुनिक सामान्य मनुष्य के धरातल पर उतार देते हैं | मध्यकालीन चेतना में "राम कथा सुन्दर करतारी, संशय विहग उडावन हारी" के रूप में दर्ज है यहाँ तक कि भगवत गीता में कहा गया है "संशयात्मा विनश्यति" | अब निराला के राम को देखते हैं "स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर-फिर संशय" संशय आधुनिकता का पहला लक्षण है | बिना संशय के शोध संभव नहीं है कोई चाहे तो निराला की कविता में रिसर्च मेथडोलॉजी भी ढूंढ सकता है –

"धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिए सदा ही किया शोध!"15

| कविता में राम हताश होते हैं, रोते हैं, शक्ति को अन्याय के पक्ष में देखकर विचलित होते हैं लेकिन हार नहीं मानते बल्कि शक्ति की मौलिक साधना करते हैं और उनका यह मौलिक शोध व्यर्थ नहीं गया इससे एक आधुनिक पुरुषोत्तम नवीन निकल कर सामने आया "होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन"16 | कविता पढ़ते हुए लगता है राम ईश्वर नहीं भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के नायक हैं आखिर गांधी ने भी तो शक्ति की मौलिक कल्पना से ही अंग्रेजों का मुकाबला किया था |

हिन्दी साहित्य में शोक गीत की शुरूआत करने वाले भी निराला है | सरोज स्मृति सिर्फ उनके पहाड़ जैसे दुःख का विरेचन नहीं है | यह सच है कि अपनी रचनात्मक यात्रा के इस पड़ाव पर दुख का वह भारी पत्थर जिसे उन्होंने अध्यात्म के सहारे उठा रखा था वह धड़ाम से गिर पड़ता है, कवि चीत्कार करता है, अपने जीवन की व्यर्थता का सबसे तीव्र अनुभव कविता में व्यक्त करता है | लेकिन स्वयं अपनी पुत्री के सौन्दर्य का जो अकुंठ वर्णन निराला ने इस कविता किया है वह एक असंभव चीज है |

"क्या दृष्टि! अतल की सिक्त-धार
ज्यों भोगावती उठी अपार,
उमड़ता ऊर्ध्व को कल सलील
जल टलमल करता नील-नील,"17

निराला अकेले ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपने बाद की समूची हिन्दी कविता को प्रभावित किया है | शमशेर बहादुर सिंह, वीरेन डंगवाल, केदारनाथ सिंह सहित अनगिनत कवियों ने न सिर्फ निराला का ऋण स्वीकार किया है बल्कि उन्हें समर्पित कवितायें लिखीं हैं | नक्सलवाड़ी धारा के कवि वीरेन डंगवाल अपनी कविता 'उजले दिन ज़रूर' में निराला के राम को याद करते हुए लिखते हैं –

"आतंक सरीखी बिछी हुई हर ओर बर्फ़
है हवा कठिन, हड्डी-हड्डी को ठिठुराती
आकाश उगलता अंधकार फिर एक बार
संशय-विदीर्ण आत्मा राम की अकुलाती"18

वीरेन डंगवाल की यह कविता निराला के राम को समझने की सही जमीन मुहैया कराती है | इतना ही नहीं शमशेर बहादुर सिंह निराला को याद करते हुये लिखते हैं –

"भूलकर जब राह- जब-जब राह...भटका मैं
तुम्हीं झलके, हे महाकवि,
सघन तम की आंख बन मेरे लिए,"19

निराला की रचना प्रक्रिया बहुआयामी है जिसका विस्तार वर्तमान कविता तक होता चला आ रहा है | 'रचना प्रक्रिया का विस्तार' पद किंचित अजीब लग सकता है लेकिन शमशेर बहादुर सिंह जैसा कवियों का कवि इसकी गवाही दे गया है | निराला ने जीवन और रचना कर्म का अद्वैत निर्मित किया, जिसने उन्हें मर्म भेदक दृष्टि प्रदान की | इसीलिए हर राह भटका लौट-लौट कर उन तक जाता है बस शर्त यह है कि वह शमशेर की तरह सच्चा हो |

सन्दर्भ-सूची

1. शर्मा रामविलास:निराला की साहित्य-साधना,प्रथम खंड,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2022,पृ.सं.26-27
2. वही पृ.सं 31
3. संपादक-नवल नंदकिशोर:निराला रचनावली भाग 4 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 1998 पृ.सं.48
4. शर्मा रामविलास:निराला की साहित्य-साधना,प्रथम खंड,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2022,पृ.सं.35-36
5. सम्पादक-मिश्र अवधेश नारायण, पाण्डेय नंदकिशोर :आधुनिक भारतीय कविता विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी,2005 पृ.सं.97-98
6. संपादक-नवल नंदकिशोर:निराला रचनावली भाग 1 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2006 पृ.सं.224
7. शर्मा रामविलास:निराला की साहित्य-साधना,प्रथम खंड,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2022,पृ.सं.21
8. संपादक-नवल नंदकिशोर:निराला रचनावली भाग 1 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2006 परिमल की भूमिका पृ.सं.425
9. संपादक-नवल नंदकिशोर:निराला रचनावली भाग 1 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2006, पंचवटी प्रसंग-1 पृ.सं.51
10. संपादक-नवल नंदकिशोर:निराला रचनावली भाग 1 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2006, पृ.सं.47
11. संपादक-नवल नंदकिशोर:निराला रचनावली भाग 1 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2006, पृ.सं.204
12. वही पृ.सं 205
13. वही पृ.सं 205
14. मुक्तिबोध गजानन माधव: चाँद का मुह टेढ़ा है, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली 2021 पृ.सं.33
15. संपादक-नवल नंदकिशोर:निराला रचनावली भाग 1 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2006, पृ.सं.337
16. वही पृ.सं.338
17. संपादक-नवल नंदकिशोर:निराला रचनावली भाग 1 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2006, पृ.सं.320
18. https://www.hindwi.org/kavita/ujle-din-zarur-viren-dangwal-kavita
19. https://www.hindwi.org/kavita/nirala-ke-prati-shamsher-bahadur-singh-kavita-2